प्रथमप रिगतार्थस्तं रघुः सिन्नवृतं
विजयिनमभिनन्द्य श्लाध्यजायासमेतं १
तदुपहितकुदुम्बः शान्तिमार्गोत्सुको न्भून हि सित कुलधुर्ये सूर्यवंश्या गृहाय ११६५॥

इति श्रीरघुवंशे महाकाये किवशीकालिदासकृती अजपाणियहणो नाम सप्तमः सर्गः १९११

THE SEPTIMENT PRINTS OF THE PROPERTY OF THE PR

न्तर्वासमम्बद्धिताः स्वत्राधिकारं भीत्रविकारः स्वास्त्राधिकारः ।

विष्णिक्षाम् विकासम्बद्धितार विकास स्वासी विकास स्वासी विकास ।

विषणिक्षाम् विकास विकास स्वासी विकास स्वासी स्वासी स्वासी ।

विषणिक्षामा स्वासी स्वासी विकास स्वासी स्वासी स्वासी स्वासी स्वासी ।

पूर्णिक निव्हासी स्वासी स्वासी स्वासी स्वासी स्वासी स्वासी ।

पूर्णिक निव्हासी स्वासी स्वासी स्वासी स्वासी स्वासी स्वासी ।

विकास स्वासी स्

DENFERRING ENDING TOP PERSON

HALL THE REPORTED TO SEE THE PROPERTY OF THE P